अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष : 2, अंक : 9

जनवरी 2025

व्यक्ति और राष्ट्र का

मार्गदर्शक संविधान

वर्ष : 2 अंक : 9

जनवरी 2025

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद ही राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी ने आजाद भारत को चारित्रिक दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। यह आंदोलन आज सात दशक बाद भी अपनी प्रासंगिकता बनाये हुए है तथा व्यक्ति सुधार के प्रकल्पों के साथ एक अहिंसक शांतिप्रिय समाज निर्माण के अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है।

- अर्जुन राम मेघवाल

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

'मेरा' संविधान

संविधान की इन दिनों देश में बहुत चर्चा है। संविधान को सामान्यत: शासन संचालन का एक आधार सूत्र मात्र मान लिया जाता है लेकिन ऐसा मानना एक भूल होगी। जब तक संविधान के सूत्र उसके दायरे में आने वाले प्रत्येक सदस्य के जीवन संचालन को प्रभावित नहीं करते, तब तक उस शासन तंत्र का भी सुचारु संचालन सम्भव नहीं है। व्यक्ति से ही समाज, संगठन, राज्य या देश बनते हैं। यदि व्यक्ति संविधान के अनुरूप चलता है तो उस समाज, संगठन, राज्य या देश की संविधान के अनुरूप गति को कोई ताकत बाधित नहीं कर सकती।

प्रत्येक व्यक्ति अपने संविधान से परिचित हो और उस पर चलने को कटिबद्ध हो, इसके लिए आवश्यक है एक ऐसा संविधान जो व्यक्ति स्वयं अपने ऊपर लागू कर सके, जो 'मेरा' संविधान बन सके। जिसका मूल ढाँचा मेरे लिए और हर एक व्यक्ति के लिए अपरिवर्तनीय हो लेकिन अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप जिसकी सामान्य धाराओं में मैं संशोधन कर सकूँ। ऐसा ही एक संविधान है अणुव्रत का संविधान, अणुव्रत की आचार संहिता।

अणुव्रत का संविधान किसी शासन द्वारा नहीं बल्कि व्यक्ति द्वारा स्वयं अपने ऊपर लागू किया जाता है। 75 वर्षों की संपूर्ति के साथ-साथ भारत का संविधान और अणुव्रत का संविधान एक-दूसरे के सहगामी हैं। हमें यदि भारत के संविधान की रक्षा करनी है तो प्रत्येक नागरिक को अणुव्रत के संविधान को अपने जीवन में अपनाना होगा। जीवन में अणुव्रत को अपनाये बिना यदि संविधान की रक्षा की बात की जाती है तो वह वाक् विलास से अधिक कुछ नहीं। यह खुद को और देश को भी धोखा देना होगा।

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

अणुव्रत का आर्थिक दर्शन

■ आचार्य महाप्रज्ञ

संपत्ति क्या है? अर्थ क्या है? जो जीवन के लिए आवश्यक है, वह अर्थ है। वह हर वस्तु, जिसका जीवन में आवश्यकतानुरूप उपयोग होता है उसका नाम है - संपत्ति। आलमारियों में जो सोना पड़ा है और लॉकर में जो गहना पड़ा है, वह भी अर्थ है। बाहर जंगल में टीलों पर रेत पड़ी है, वह भी उपयोगी है। इस बालू का अर्थ नहीं है, ऐसा हम नहीं मान सकते। सब पदार्थ-जितनी हमारी दृश्य वस्तुएं हैं, जो दीखती हैं, वे सब अर्थ हैं।

अब प्रश्न रहा अर्थ की व्यवस्था का। संपत्ति सबके काम की है। एक समस्या है - संपत्ति कम और उपभोक्ता ज्यादा। संपत्ति सबको सुलभ नहीं है, अर्थ सबको सुलभ नहीं है। इस स्थिति में व्यवस्था की बात आती है। व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे कि सबकी आवश्यकता की पूर्ति हो सके। कोई कष्ट में न रहे और कोई बेघरबार न रहे। कोई वस्त्र के बिना न रहे। जीवन की जितनी प्राथमिक अनिवार्य आवश्यकताएं हैं, उनसे वंचित न रहे।

महात्मा गांधी की भविष्यवाणी

साम्यवादी विचारधारा के आधार पर एक सुनहरा सपना देखा गया। यह इतना मीठा सपना था कि ऐसा लगा - दुनिया की सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। उस समय भी महात्मा गांधी ने एक भविष्यवाणी की थी और वह भविष्यवाणी आज बहुत चरितार्थ हो रही है। गांधीजी की भविष्यवाणी उन्हीं के शब्दों में - ''हिंसा और असत्य पर होने वाली समाज-व्यवस्था कभी टिकाऊ नहीं होती। वह टिक नहीं पाएगी। एक दिन वह धराशायी हो जाएगी।''

हिंसा और असत्य पर आधारित होने वाली व्यवस्था एक बार भले ही अच्छी लगे, पर दीर्घायु और चिरस्थायी नहीं हो सकती।

आज कोई भविष्यवाणी करे तो वह भविष्यवाणी नहीं, अतीत का दर्शन होगा, क्योंकि ऐसा हो गया, पर जिस समय साम्यवादी क्रांति थी और जिसके आधार पर दुनिया रंगीन दृश्य देख रही थी, उस समय यह भविष्यवाणी की थी – वही व्यवस्था टिकाऊ हो सकती है जिसके आधार में अहिंसा और सत्य है। हिंसा और असत्य पर आधारित होने वाली व्यवस्था एक बार भले ही अच्छी लगे, पर दीर्घायु और चिरस्थायी नहीं हो सकती। हमने उस वाणी को चरितार्थ होते देखा है। गांधीजी तो नहीं देख सके, पर हमने देख लिया कि आज जैसे वह सारी व्यवस्था धराशायी हो गयी और अब मोहभंग भी हो गया है।

हृदय-परिवर्तन का सिद्धांत

महात्मा गांधी ने साधनों पर विचार किया। उस समाज रचना का साधन रहा – हृदय-परिवर्तन। उस अर्थव्यवस्था ने एक प्रकल्प दिया ट्रस्टीशिप का। गांधीवाद का एक विचार रहा – संपत्ति किसी व्यक्ति की नहीं। गांधी की भाषा में वह ईश्वर की है या यह कह दें कि समाज की है। जिस व्यक्ति में बौद्धिक और व्यावसायिक कौशल है, वह संपत्ति का अर्जन करता है, संपत्ति पर अधिकार करता है, किंतु जितनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित हो, उतनी तो अपने काम में लेनी चाहिए और शेष संपत्ति को ट्रस्टीशिप में डाल देना चाहिए। वह उस संपत्ति का ट्रस्टी बना रहे। उसका उपभोग न करे।

अहिंसा, हृदय परिवर्तन और साधन-शुद्धि - इन पर गांधी ने बल दिया, किंतु लगता है कि ट्रस्टीशिप का विचार मान्य नहीं हुआ और इसलिए नहीं हुआ कि ट्रस्टीशिप की बात में जो व्यक्ति ट्रस्टी रहे, उसके हृदय-परिवर्तन की बात नहीं है। ट्रस्टीशिप का विचार कब सार्थक हो सकता है? जिसके हाथ में संपत्ति है, वह संपत्ति रखने वाला व्यक्ति इतना प्रशिक्षित हो जाये, इतना रूपांतरित हो जाये, उसका लोभ इतना उपशांत हो जाये कि वह ट्रस्टीशिप के सिद्धांत को क्रियान्वित कर सके। ऐसा हुआ नहीं। लोभ छूटा नहीं। एक-दो व्यक्ति की बात छोड़ दें, किंतु वह क्रियान्वित नहीं हो सका। यदि यह सिद्धांत क्रियान्वित हो जाये, ट्रस्टीशिप की बात वास्तव में आ जाये तो अर्थव्यवस्था का एक सुंदर विकल्प समाज के सामने आ जाएगा।

अर्थशास्त्र और अणुव्रत

अणुव्रत की दृष्टि से विचार करें। उत्पादन, विनिमय, वितरण और उपभोग - ये अर्थशास्त्र के जो मूलभूत प्रश्न हैं, इन सबका आधार नैतिकता होनी चाहिए। अहिंसा का पहला चरण है नैतिकता। अहिंसा में आस्था उपजे या न उपजे, किंतु नैतिकता - यह अहिंसा का भी चरण है और समाज-व्यवस्था का भी अनिवार्य चरण है। वह समाज कभी अच्छा नहीं हो सकता जिसमें नैतिकता नहीं है। धर्म को माने या न माने, अध्यात्म को माने या न माने, मोक्ष को माने या न माने, परमार्थ को माने या न माने फिर भी नैतिकता अनिवार्य है। जहाँ दो व्यक्ति मिलते हैं, जहाँ द्वंद्व होता है, समाज बनता है - वहीं से नैतिकता का बिंदु प्रारंभ हो जाता है। अणुव्रत के संदर्भ में समाज की आर्थिक संरचना का आधार होगा नैतिकता।

आर्थिक दृष्टि से अणुव्रत का एक सूत्र है - व्यक्तिगत स्वामित्व का सीमाकरण। न आर्थिक समानता, न ट्रस्टीशिप, किंतु व्यक्तिगत स्वामित्व का सीमाकरण। यह पहले व्यक्ति को बदलने का प्रयोग है, अर्थव्यवस्था को

बदलने का नहीं। व्यक्ति में यह संकल्प जागे कि वह व्यक्तिगत स्वामित्व की सीमा करेगा।

अर्जन के साथ विसर्जन

अणुव्रत का दूसरा सिद्धांत है - अर्जन के साथ विसर्जन। इतना अर्जन करूँगा तो उसके साथ आय के निश्चित भाग का अवश्य विसर्जन करूँगा। सुंदर विकल्प है विसर्जन का। जब विसर्जन का सिद्धांत जुड़ेगा, तब अर्जन के साथ साधन-शुद्धि का सिद्धांत भी जुड़ेगा। पहले साधन-शुद्धि अर्थात् अर्जन में साधन-शुद्धि और अर्जन के साथ विसर्जन - यह एक पूरा अर्थव्यवस्था का क्रम बनता है।

हृदय-परिवर्तन और व्यवस्था

उसके बाद प्रश्न आता है प्रक्रिया का। कैसे हो यह? उसके लिए हृदय-परिवर्तन अनिवार्य है। अणुव्रत की भूमिका में विचार करें तो हृदय-परिवर्तन तक सीमित न रहें, किंतु हृदय परिवर्तन के साथ जो हृदय-परिवर्तन को प्रोत्साहन दे, समर्थन दे, वैसी व्यवस्था का भी योग होना जरूरी है। इन सारे सूत्रों के आधार पर अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया जाये, चिंतन किया जाये तो अणुव्रत का एक आर्थिक दर्शन प्रस्तुत किया जा सकता है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के उद्गार सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

भारतीय संविधान में अणुव्रत का दिग्दर्शन

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल, लावा सरदारगढ़ (राज.)

भारत का संविधान एक पवित्र दस्तावेज है। अहिंसा एवं सत्य इसकी आत्मा है। शान्ति, समृद्धि एवं बंधुत्व की भावना इसका दर्शन है। अणुव्रत आचार संहिता का पहला नियम है - निरपराध प्राणियों का संकल्पपूर्वक वध नहीं करना। यह नियम अहिंसात्मक प्रवृत्ति का द्योतक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क खण्ड (छ) में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि ''वह प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे।'' प्राणिमात्र के प्रति दया, ममता एवं करुणा का भाव रखना इसका मुख्य ध्येय है। यह केवल मानव जाति की ही बात नहीं करता है, वरन् समस्त पशु-पक्षी और वनस्पति भी समाहित हैं।

इसी संदर्भ में बम्बई उच्च न्यायालय के दो निर्णय उद्धरणीय हैं। शेख जाहिद मुख्तार बनाम महाराष्ट्र राज्य (एआईआर 2017 एनओसी 518 बम्बई) के मामले में बम्बई उच्च न्यायालय ने गायों, बछड़ों एवं बैलों के वध को अवैध एवं असंवैधानिक बताते हुए उस पर रोक की अनुशंसा की है।

अणुव्रत आचार संहिता का नौवां नियम कहता है, मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा। ठीक यही बात संविधान के अनुच्छेद 51 क (छ) के खण्ड (ङ) में कही गयी है। अनुच्छेद 51 क (ङ) में समाज के विरुद्ध कुप्रथाओं को त्यागने का उपबंध किया गया है। इसमें विशेष रूप से स्त्रियों के विरुद्ध प्रथाओं को त्यागने का आह्वान किया गया है। इस दिशा में आचार्य श्री तुलसी के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है जिन्होंने

स्त्रियों के विरुद्ध चली आ रही अनेक कुप्रथाओं का उन्मूलन किया।

अणुव्रत आचार संहिता का चौथा नियम अस्पृश्यता अर्थात् छुआछूत के निषेध की बात करता है। यह जाति, रंग आदि के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है। संविधान के अनुच्छेद 17 में भी अस्पृश्यता का अन्त किया गया है। इसमें कहा गया है कि अस्पृश्यता का अन्त किया जाता है और उसे किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है। इसे दण्डनीय अपराध भी घोषित किया गया है। अब हम अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर चलें। अणुव्रत आचार संहिता के दूसरे नियम में विश्व शान्ति एवं नि:शस्त्रीकरण को स्थान दिया गया है। संविधान का अनुच्छेद 51 भी अन्तरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा में अभिवृद्धि की बात करता है। इस प्रकार विश्व शांति अणुव्रत एवं संविधान दोनों ही का एक समान लक्ष्य है।

अणुव्रत आचार संहिता का ग्यारहवां नियम पर्यावरण संरक्षण का आह्वान करता है। इसमें पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक रहने की बात कही गयी है। संविधान का अनुच्छेद 51 क का खण्ड (छ) भी इसी के समान व्यवस्था देता है। इसमें प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण पर बल दिया गया है।

अणुव्रत आचार संहिता समता, न्याय, विश्वास एवं बंधुता की पोषक है। हमारे संविधान की प्रस्तावना में भी इसी का अवगाहन किया गया है। प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, व्यक्ति की गरिमा एवं बंधुता को प्रमुखता दी गयी है।

कुल मिलाकर अणुव्रत आचार संहिता एवं संविधान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अणुव्रत जीवन जीने की कला सिखाता है तो संविधान अनुशासन एवं मर्यादा का पाठ पढ़ाता है। दोनों को एक-दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता है।

सत-चित-आनंद

■ भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना ■

जंगल हैं कंक्रीट के, बहुमंजिले मकान।
जड़-जमीन से हम कटे, गुम अपनी पहचान।।

सभ्य दानवों ने किया, यूँ प्रकृति-आखेट।
स्वर्ग सरीखी जिंदगी, चढ़ी नरक की भेंट।।

यहाँ प्रदूषित वायु-जल, है दूषित दिन-रात।
बंजर, सूखा, बाढ़ ही, नवयुग की सौगात।।

जगते ही दिखता यहाँ, धुआँ भरा संसार।
वाहन, फैक्ट्री, चिमनियाँ, महानगर बीमार।।

कालिख-सी परतें जमें, चेहरे पर हर रोज।
जी मिचलाये, दम घुटे, जीवन लगता बोझ।।

गोला बनकर आग का, धरा बताये भेद।
छतरी थी ओजोन की, उसमें भी अब छेद।।

वन से घन होते सघन, गगन घटा घहराय।
तृषित धरा की तृप्ति से, गोद हरी हो जाय।।

खुद जहरीली गैस पी, बाँटें सुधा-समीर।
विषपायी शिव वृक्ष हैं, दूर करें जन-पीर।।

बंजर-परती ना बनें, ये उपजाऊ खेत।
हवा न घोले विष यहाँ, सरंजाम कर,चेत!

गरलपान कर दें सदा, वन जीवन को छाँव।
इनकी मुट्ठी में प्रकृति, न्यारे इनके दाँव।।

हवा, रोशनी, चाँदनी, देती है भरपूर।
मुक्त हस्त से बाँटना, कुदरत का दस्तूर।।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

अद्भुत है जीव-जंतुओं का विशाल संसार!

आइवर यूशिएल, बरेली

अपने सौर मण्डल के साथी सदस्यों में वजन के हिसाब से पाँचवें नम्बर पर आने वाली हमारी पृथ्वी यूँ तो बहुत विशाल है, परन्तु इससे भी कहीं अधिक विशाल है इस पर बसने वाला प्राणी जगत। इसमें मौजूद तमाम किस्म के जीवों में इतनी विविधता है जिसका अन्दाजा आसानी से नहीं लगाया जा सकता।

एक ओर चींटी से भी छोटे अनेक जीव हैं तो दूसरी ओर हाथी से विशाल व्हेल जैसे जीव भी। एक ओर चीते जैसे तेज धावक हैं तो दूसरी ओर पेड़ पर उल्टा लटके-लटके पूरी जिन्दगी गुजार देने वाला बेहद सुस्त स्लॉथ जैसा स्तनपोषी भी। लम्बी दूरियों की उड़ान भरने वाले आर्कटिक टर्न सरीखे पक्षी भी इसी परिवार के सदस्य हैं और धीमी गति का रिकॉर्ड तोड़ता घोंघा भी इसी परिवार में शामिल है। इन जीवधारियों में ऐसी-ऐसी विशेषताएं भी देखने को मिलती हैं जो किसी को भी आश्चर्यचकित करने के लिए काफी हैं। जीव-जन्तुओं के भरे-पूरे परिवार के कई सदस्यों के अंदर तो ऐसी-ऐसी खूबियाँ देखने को मिल जाएंगी जिनके बारे में जानकर इन पर सहसा ही विश्वास कर लेना आसान नहीं होगा।

सबसे पहले तो इंसानों वाली स्तनपोषी बिरादरी के ऐसे इकलौते सदस्य की चर्चा जो उड़ने में पूर्णतया दक्ष होता है। जिस उड़ान विद्या को सीखने में मानव ने न जाने कितनी जानें और समय गँवा दिया और फिर भी केवल कृत्रिम साधनों के सहारे ही वह हवा में ऊपर उठ पाया, उसी कला

में अपशगुनी समझा जाने वाला चमगादड़ जैसा जीव प्राकृतिक रूप से ही इतना निपुण होता है कि हम इसे साधारणतया पक्षियों की बिरादरी का सदस्य मानने का भ्रम पाल बैठते हैं।

उड़ने की कला का जिक्र हो और एलबेट्रोस जैसे पक्षी का ध्यान न आये, यह कैसे संभव है भला? बिना अपने पंख फड़फड़ाये हवा में छह-छह दिन तक लगातार उड़ते रहने की क्षमता रखने वाला यह एक ऐसा विशाल पक्षी है जिसे देखकर शायद हमारे आधुनिक ग्लाइडर भी शर्मिन्दा हो जाएंगे। उनकी शर्मिन्दगी यह जानकर तो और भी बढ़ सकती है कि अपनी इन लम्बी उड़ानों के दौरान एलबेट्रोस बीच-बीच में झपकियां मारने का लुत्फ भी उठाते रहते हैं।

जीव-जन्तुओं का संसार वास्तव में विचित्रताओं से भरा पड़ा है। चमगादड़ जहाँ स्तनपोषी होकर भी उड़ने की कला में पारंगत हैं, वहीं बर्फ से ढंके दक्षिण ध्रुवीय प्रदेश पर बसने वाले पेंगुइन नामक जीव पक्षी होने के बावजूद उड़ तो बिल्कुल नहीं सकते परन्तु तैराकी की कला में इतने कुशल होते हैं कि देखने वाला दाँतों तले अंगुली दबा ले। हम एक वक्त भी भूख बर्दाश्त नहीं कर पाते, पर पेंगुइन के लिए तीन-चार माह तक बिना खाये बिता देना बहुत आसान बात है। वैसे इस दौरान शरीर पर चढ़ी चर्बी की मोटी तह पिघल-पिघल कर इसे ऊर्जा देती रहती है, यह बात अलग है।

मेहनत के मामले में भी इन छोटे-छोटे जीवों का कोई जवाब नहीं। यहाँ मधुमक्खी जैसे नन्हे-से जीव का ही उदाहरण काफी होगा। हमारी पूरी बिरादरी में जिस शहद की बेहद माँग है, उसकी केवल एक पाउण्ड मात्रा बनाने के लिए मधुमक्खियों को हजार-दो हजार नहीं बल्कि लगभग बीस लाख फूलों से मकरन्द इकट्ठा करना पड़ता है और इसके लिए इन्हें अपने छत्ते से फूलों तक जो आवाजाही

करनी पड़ती है, वह पृथ्वी के गिर्द पूरे तीन चक्कर लगाने के बराबर होती है।

विषम स्थितियों में जीवन को सहजता के साथ जीने की कला में भी जीव जगत के ये सदस्य हमसे बहुत आगे हैं। मानव शरीर में पानी की मात्रा सिर्फ बारह प्रतिशत कम हो जाये तो इसकी हालत बिगड़ने लगती है परंतु ऊंट के शरीर से यही मात्रा दोगुनी से भी ज्यादा घट जाये तब भी इसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि प्रकृति ने इसे एक विशेष सुविधा से लैस कर दिया है जो हमें मुहैया नहीं है।

इन उदाहरणों से इस विशाल बिरादरी के कुछेक सदस्यों की विशेषताओं के बारे में आपने जो कुछ जाना, उससे इन जीव-जन्तुओं के बारे में और अधिक जानने की आपकी उत्कंठा निश्चय ही बढ़ी होगी। आप इनके बारे में जितना अधिक जानने का प्रयास करेंगे, इनके प्रति आपका लगाव व झुकाव और अधिक बढ़ता जाएगा जो अंतत: पूरे विश्व के लिए बेहद कल्याणकारी सिद्ध होगा, इसमें तनिक भी संशय नहीं।

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अब बढ़े हुए पृष्ठों के साथ!

हिन्दी के साथ-साथ अब बच्चों को पढ़ने को मिलेगी अंग्रेजी की कहानियाँ।

कागज के पंख

देवेन्द्र राज सुथार, जालौर

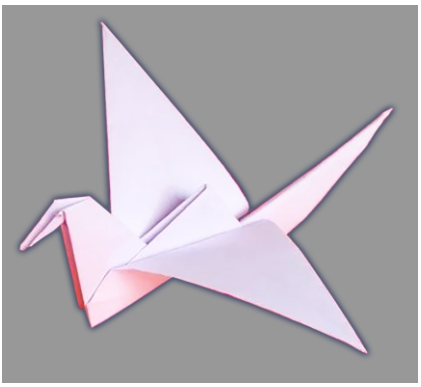

स्कूल का वार्षिक कार्यक्रम था। नन्ही रिया ने खुशी से पापा को कहा–''पापा, इस बार मैं कविता पढ़ने वाली हूँ। आप जरूर आइएगा।''

पापा ने मुस्कुराकर सिर हिला दिया।

कार्यक्रम वाले दिन रिया मंच पर थी। उसकी नजरें बार-बार दरवाजे की ओर जा रही थीं।

''अब मंच पर आ रही हैं हमारी प्यारी रिया!'' संचालक की घोषणा हुई।

रिया ने कविता शुरू की –

''आकाश के परिंदे, पंखों से न हारो।
हर सपना पूरा होगा, बस मन में उतारो।''

सभा में तालियाँ गूँज रही थीं, पर रिया की आँखें भीगी थीं। पापा नहीं आये थे।

घर लौटकर उसने पूछा,''पापा, आपने वादा क्यों तोड़ा?''

पापा ने सिर झुका लिया–''रिया, पैसे कमाने की भागदौड़ में भूल गया कि सपने कागज के पंख से नहीं, भावनाओं से उड़ते हैं। अगली बार ऐसा नहीं होगा।''

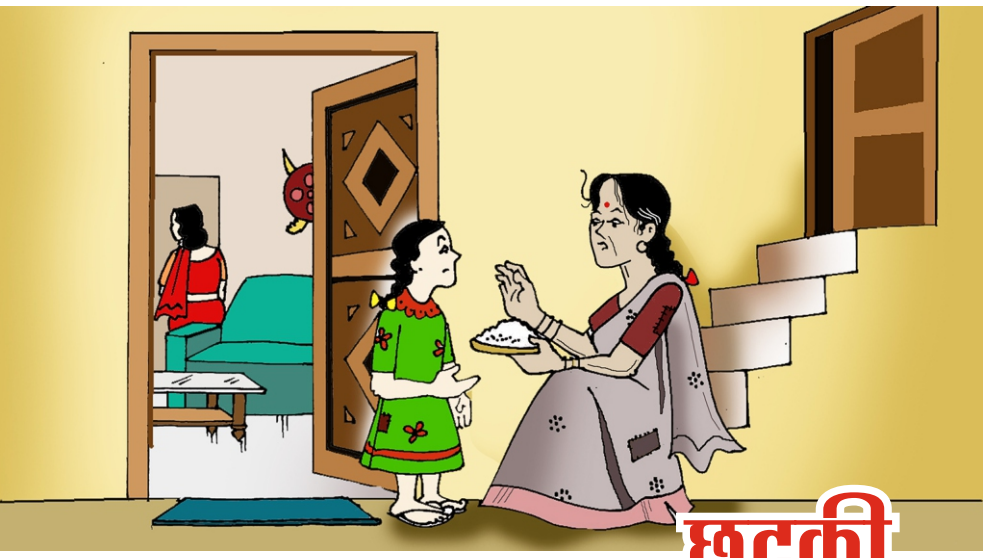

छुटकी

पूनम सिंह 'भक्ति', दिल्ली

ठकुराइन ने जोर से आवाज देते हुए बुलाया-''अरे ओ.. छुटकी कहाँ है तू?'' छुटकी दौड़ती हुई आयी और टुकुर-टुकुर उनकी ओर देखने लगी।

''यहीं रुक, मैं अभी आयी।'' इतना कहकर ठकुराइन भीतर रसोईघर में जाकर कुछ खाना लेकर आयी और छुटकी से कहा-''तेरा बर्तन कहाँ है?''

छुटकी भागकर गयी और एल्यूमिनियम का पुराना प्लेट ठकुराइन के आगे बढ़ा दिया।

''दूर ही रख, सवेरे-सवेरे गंगा स्नान करवाएगी क्या?'' और भनभनाते हुए ऊपर से प्लेट में खाना परोस दिया।

ठाकुर साहब गाँव के बड़े जमींदार थे। उनका इकलौता पुत्र था सुबोध जो कभी-कभी साँझ में छुटकी के साथ बैट-बॉल खेलता। वह भी माँ से छुपाकर क्योंकि वह जानता था कि अगर माँ देख लेगी तो नाराज होगी और इसके आसपास फटकने तक नहीं देगी। सुबोध को यह धर्म और रीति-रिवाज की बातें समझ नहीं आती थीं और न ही उसे भाती थीं।

एक दिन अचानक फुलवा भागती हुई आयी और जोर-जोर से चिल्लाते हुए कहने लगी,''ठकुराइन, कहाँ हैं आप? जल्दी चलिए जल्दी...छोटे ठाकुर खेलते-खेलते किसी नुकीले पत्थर से टकरा गये और उनका माथा फट गया है।''

ठकुराइन के तो सुनते ही जैसे होश उड़ गये। जैसे-तैसे नंगे पाँव ही भागी। पीछे-पीछे फुलवा और छुटकी भी दौड़ीं। देखा, सुबोध जमीन पर बेहोश पड़ा था और रक्त की धार बहे जा रही थी।

''हे प्रभु!'' बेटे को देखते ही ठकुराइन बेचैन हो उठी। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। अस्पताल भी पंद्रह किलोमीटर दूर था। ठकुराइन फुलवा की मदद से जैसे-तैसे सुबोध को गाड़ी में बिठाकर अस्पताल पहुँचीं। फुलवा को भी उन्होंने साथ ले लिया था। अस्पताल पहुँचते ही डॉक्टरों की देखरेख में इलाज शुरू हुआ। रक्त अधिक बह जाने के कारण सुबोध को खून चढ़ाने की आवश्यकता आन पड़ी। तब तक ठाकुर साहब भी अस्पताल पहुँच चुके थे। अस्पताल में सुबोध के ब्लड ग्रुप का खून खत्म हो चुका था। एक यूनिट और खून की जरूरत थी। आसपास के अस्पतालों में भी उस ग्रुप का ब्लड उपलब्ध नहीं था। उनके तो जैसे हलक में प्राण अटके हुए थे। कितने ही यज्ञ, अनुष्ठान और मन्नतों के बाद सुबोध का जन्म हुआ था। उसकी सलामती के लिए वे कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। ठाकुर साहब गहरी सोच में डूबे हुए थे कि तभी डॉक्टर ने आकर पूछा,''किस आत्मचिंतन में डूबे हैं ठाकुर साहब? एक आखिरी उम्मीद बची है फुलवा, आप इजाजत दें तो उसका ब्लड ग्रुप भी टेस्ट कर लेते हैं।''

ठाकुर-ठकुराइन ने एक-दूसरे की ओर देखा,''फुलवा! नहीं-नहीं, किसी नीच जाति का खून हमारे बेटे की रगों में...!'' वे मन ही मन बुदबुदाये। समाज में मान-प्रतिष्ठा, बरसों का रुतबा ताश के पत्तों की भाँति ढहता हुआ दिख रहा था। दूसरी ओर स्वार्थी मन सोच रहा था कि अगर बेटा

ही नहीं रहेगा तब यह जात-पांत, संपत्ति के रुतबे का क्या मोल रह जाएगा? कुछ पल की खामोशी के पश्चात् ठाकुर साहब ने लम्बी साँस खींचते हुए कहा,''जैसा आप ठीक समझें, वैसा ही करें...।''

थोड़ी देर बाद डॉक्टर ने आकर बताया,''बधाई हो ठाकुर साहब, फुलवा का ब्लड ग्रुप मैच कर गया था। खून चढ़ाने के बाद अब सुबोध को होश भी आ गया है।'' सुनते ही सबकी खुशी का ठिकाना न रहा। कुछ ही दिनों में सुबोध स्वस्थ होकर घर आ गया, लेकिन कमजोरी के कारण पलंग पर ही लेटा रहता। फुलवा एक दिन हिम्मत करके छोटे ठाकुर का हाल-चाल पूछने उसके कमरे में आयी और बहुत ही धीमी आवाज में पास बैठी ठकुराइन से पूछा,''छोटे ठाकुर की तबीयत कैसी है ठकुराइन?''

''पहले से बेहतर है।'' ठकुराइन ने कहा।

सुबोध ने अपनी गर्दन उचकाकर बाहर की तरफ देखने की कोशिश की, फिर पूछा,''क्या छुटकी नहीं आयी माँ?''

''आयी है छोटे ठाकुर, हमरे पीछे छुपी है।'' फुलवा ने अपने पीछे छुपी छुटकी को आगे करते हुए कहा। सुबोध ने इशारे से छुटकी को पास बुलाया। छुटकी झट से अंदर दौड़कर जाने को हुई कि फुलवा ने रोक लिया और बोली, ''अरे नहीं बिटिया, छोटे ठाकुर की तबीयत ठीक नाही, तुम यहीं से बात कर लो।''

छुटकी समझ गयी कि अम्मा उसको अन्दर जाने से क्यों मना कर रही है।

''काहे अम्मा, तुम्हरे खून देने के कारण ही तो छोटे ठाकुर की तबीयत ठीक हुई है न..! फिर तो अब हम सबकी जात तो एक ही हुई न...?'' छुटकी ने ऐसी बात कह दी जिसे सुनते ही कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया।

तभी ठकुराइन ने बात सम्भालते हुए कहा-''हाँ.. हाँ.. छुटकी अन्दर आ जाओ।'' सहमती हुई वह सुबोध के पास पहुँची, पर दूर ही खड़ी रही।

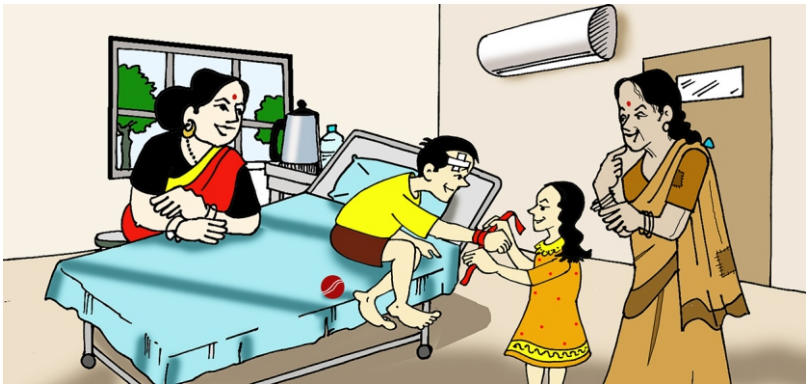

''अरे तूने अपने पीछे क्या छुपा रखा है? छुटकी ने अपना हाथ आगे करते हुए मासूमियत भरे शब्दों में कहा,''बॉल है छोटे ठाकुर..!'' फिर सहमते हुए बोली, ''अब तो हम-तुम आराम से बैट-बॉल खेल सकते हैं न छोटे ठाकुर... ?''

''हाँ... हाँ... छुटकी, क्यों नहीं! जब सुबोध ठीक हो जाएगा तब तुम उसके साथ खेल सकती हो।'' ठकुराइन ने छुटकी के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा। छुटकी भी हैरान थी कि जो ठकुराइन ऊपर से ही उसे खाना परोसती थीं, आज वह उसके माथे पर हाथ फेर रही हैं।

सुबोध ने उसे कहा,''छुटकी... जरा इधर तो आ।''

''क्या है छोटे ठाकुर?'' कहती हुई वह सुबोध के नजदीक पहुँची। सुबोध ने अपनी कलाई छुटकी की तरफ बढ़ा दी और कहा-''आज राखी है..! राखी नहीं बाँधेगी?''

''क्या...ऽऽऽ...?'' छुटकी और फुलवा को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि वे क्या सुन रही हैं। छुटकी खुशी से उछलती हुई बोली,''सच छोटे ठाकुर...? पर हमरे पास तो राखी है ही नहीं।''

''अच्छा ठीक है। चल, तू अपनी आँखें बंद कर।''

जैसे ही छुटकी ने आँखें बंद कीं, सुबोध ने उसके बालों में बंधा रिबन खोल दिया और कहा,''ये ले...बाँध दे राखी।''

छुटकी ने रिबन रूपी राखी सुबोध की कलाई पर बाँध दी। सुबोध ने आशीर्वाद का हाथ उसके सिर पर रखते हुए कहा,''आज से तू मुझे छोटे ठाकुर नहीं, भैया बोलना।''

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

की रचनात्मक भेंट

अणुव्रत कैलेण्डर 2025

अणुव्रत कैलेण्डर की विशेषताएं

- अणुव्रत दर्शन, अणुविभा के प्रकल्पों की जानकारी, अणुव्रत आचार संहिता आधारित चित्र, अणुव्रत के विशिष्ट दिवसों की जानकारी, तिथियां, वर्गीय अणुव्रत व अणुव्रत गीत इत्यादि अणुव्रत कैलेण्डर के विशेष आकर्षण हैं।
- लगभग 15"X20" आकार के अणुव्रत कैलेण्डर का मूल्य मात्र 70/– रुपये है।

सम्पर्क सूत्र

+91 98919 47000, 98994 45249, 91166 34512

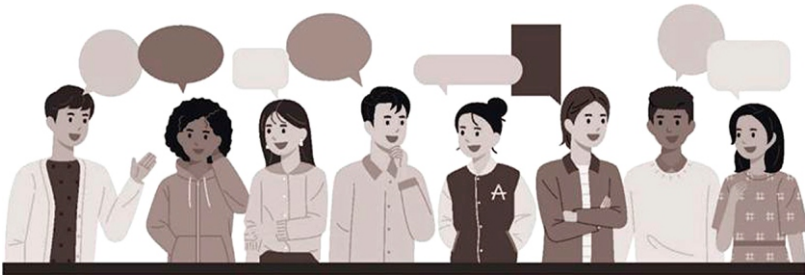

नयी पीढ़ी के प्रति हमारा दायित्व

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

सत्य को पहचानने का अवसर दें

वैश्वीकरण के इस दौर में पश्चिम का अंधानुकरण करती हमारी नयी पीढ़ी को अब ठहरने व संभालने की आवश्यकता है। हम स्वयं अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जुड़े रहकर भ्रम-भ्रांतियों को समझ कर, उन्हें सुलझा कर, ठोस वैज्ञानिक धरातल का आधार प्राप्त कर पूर्ण स्थिरता के साथ उनसे जुड़े रहें तथा नयी पीढ़ी को भी निरंतर जुड़ाव हेतु प्रोत्साहित एवं प्रेरित करें। खुशियों के अवसरों से जुड़ी परंपराओं का संश्लेषण-विश्लेषण करते हुए उन्हें सत्य को पहचानने का अवसर दें ताकि वे उचित समय पर उचित निर्णय ले पाएं। उनके अनुचित निर्णय पर तटस्थ रहते हुए उन्हें अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने को प्रेरित करें।

– **डॉ. चेतना उपाध्याय**, अजमेर

श्रेष्ठ संस्कार और शिक्षा दें

एक चिंतित पिता अपने बच्चों के लिए संपत्ति एकत्र करता है। एक अच्छा पिता अपने बच्चों के लिए साख (Goodwill) छोड़कर जाता है, लेकिन एक श्रेष्ठ पिता अपने बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार और शिक्षा देता है तो अगली पीढ़ी योग्य और काबिल बन पाती है। नयी पीढ़ी के प्रति दायित्व की बात करें तो सबसे पहले आवश्यक है कि बच्चों

के भावों का सम्मान करें। उनमें प्रामाणिकता, क्षमा, समन्वय, करुणा, सह-अस्तित्व द्वारा नैतिकता व मानवीयता का विकास करें। उनकी रुचि के अनुसार कॅरियर चुनने का अवसर प्रदान करें।

– **कमलेश कुमार धाकड़**, नाथद्वारा

अभिभावक स्वयं पेश करें मिसाल

हमारा व्यवहार, शब्द और कार्य बच्चों पर सीधा प्रभाव डालते हैं। हम जो भी करते हैं, उसे देखकर वे सीखते हैं। इसलिए सदैव अभिभावक स्वयं एक अच्छा उदाहरण पेश करें। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ सामाजिक-धार्मिक संगठनों से जोड़ें। कॅरियर और जीवन के बारे में सही मार्गदर्शन देने के साथ ही पैसों की अहमियत समझाकर उन्हें बचत और सही निवेश के लिए प्रेरित करें। उनकी भावनाओं का सम्मान करें। उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनें, समझें और यथोचित मार्गदर्शन दें।

– **वीरेंद्रकुमार सालेचा**, अहमदाबाद

कर्त्तव्यबोध का एहसास कराएं

नयी पीढ़ी के प्रति सबसे बड़ा दायित्व है उनके अंदर 'संस्कारों' की जन्मघुट्टी कूट-कूट कर भरना। संस्कार भाषा का हो, आचरण-व्यवहार का हो तथा बड़े-बुजुर्गों की सेवा एवं उनके आत्मसम्मान की रक्षा का। उन्हें अपने परिवार, समाज, राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के कर्त्तव्यबोध का एहसास कराएं जिससे वे चरित्रबल, आत्मविश्वास, समर्पण और पुरुषार्थ से लबरेज रहें। जिस समाज व देश की युवा पीढ़ी जितनी सक्षम होती है, वह समाज व देश उतना अधिक सक्षम बन पाता है। आदर्श वह होता है जो श्रद्धाशील, सहनशील, कर्मशील, विचारशील और चरित्रशील है। युवा पीढ़ी के अंदर इन क्रियाशील विचारों का बोध करना हमारा सबसे बड़ा दायित्व है।

– **नंदलाल भाटिया 'नवल'**, मुंबई

नींव के पत्थर हैं ये, तराशो इन्हें

मौजूदा शिक्षा प्रणाली बच्चों को व्यावहारिक या नैतिक शिक्षा देने के बजाय किताबी शिक्षा ही देती है। एकल परिवार तथा एक ही बच्चे की अवधारणा ने पारिवारिक ढाँचे को छिन्न-भिन्न कर दिया है। माता-पिता बच्चों को अपने स्वप्न पूरा करने का माध्यम बनाने के बजाय उन्हें अपने स्वप्न स्वयं देखने और उन्हें पूरा करने का हौसला दें। बच्चों की सफलता-असफलता सिर्फ उनकी ही नहीं, पालकों की भी है। व्यर्थ दोषारोपण करने के बजाय उनके मानसिक स्तर पर उतर कर उनकी समस्याओं को समझ कर उनका मार्गदर्शन करें, उन्हें अपने ध्येय में सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मठता का महत्व समझाएं -

नींव के पत्थर हैं ये, तराशो इन्हें,
मुरझा न जाएं, सम्भालो इन्हें।

- **सुधा आदेश**, बेंगलुरु

बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाएं

बच्चों से खुलकर बात करें और उन्हें बताएं कि परिवार, समाज और व्यक्तिगत जीवन में उनकी भूमिका क्यों जरूरी है। उन्हें छोटी-छोटी जिम्मेदारियां दें। उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियों की सराहना करें। इससे वे प्रेरित होंगे। उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का प्रयास करें। उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने दें। इससे वे समझेंगे कि हर निर्णय के साथ जिम्मेदारी भी आती है। उन्हें समय की कीमत और सही प्रबंधन करने के फायदे बताएं।

- **संगीता बैद**, गुवाहाटी

भयमुक्त वातावरण प्रदान करें

नयी पीढ़ी को सभी प्रकार के भय से मुक्त तथा सौहार्दपूर्ण वातावरण प्रदान करना होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में मानव मूल्यों का सम्मान करते हुए स्वतंत्र भाव से अपने उत्थान और

विकास का अवसर प्राप्त हो। जहाँ बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति मात्र अपनी व्यक्तिगत योग्यता के आधार पर सार्वजनिक संस्थाओं का नेतृत्व और प्रतिनिधित्व करने के लिए स्वीकार्य हो।

– **गंगाधर शर्मा 'हिन्दुस्तान'**, अजमेर

आगामी परिचर्चा का विषय

कैसी है हमारी बैलेंस–शीट?

हर व्यवसायी प्रतिवर्ष 31 मार्च को अपने आय–व्यय का लेखा–जोखा तैयार करता है ताकि प्रगति का ठीक–ठीक आकलन हो सके। बैलेंस–शीट सफलता का पैमाना होती है। क्या हमारा स्वयं का जीवन हमारे व्यापार या उद्योग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण नहीं है? फिर, कैसी है हमारे जीवन की बैलेंस–शीट? हमने क्या जोड़ा और क्या खोया है जीवन में? यहाँ बात पैसों की या धन की नहीं है। बात स्व–अर्जित उस संपत्ति की है जो हमारे जीवन को अधिक उद्देश्यपूर्ण, सुकूनदायक और कल्याणकारी बना सके। बात उस नकारात्मकता की भी है जिसने हमारे जीवन को बोझिल बनाया है। आइए, अपनी बैलेंस–शीट बनाने का एक प्रयास करते हैं!

'अणुव्रत' पत्रिका के 'मार्च 2025' अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 10 फरवरी 2025 तक निम्न व्हाट्सएप नम्बर के माध्यम से भेजें।

9116634512

अणुव्रत समाचार

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण को अणुव्रत कैलेण्डर भेंट

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी को अणुविभा अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ व महामंत्री मनोज सिंघवी ने अणुविभा द्वारा प्रकाशित वर्ष 2025 का कैलेण्डर भेंट किया। अणुविभा अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड़ ने आचार्यश्री को कैलेण्डर की विशिष्टताओं के साथ ही इसके निर्माण और प्रसार के संबंध में जानकारी प्रदान की।

प्रताप सिंह दुगड़ कैलेण्डर की विशिष्टताओं की जानकारी देते हुए। वीडियो देखने के लिए दिए गए चिह्न पर स्पर्श करें...

अणुव्रत अनुशास्ता ने पर्यावरण जागरुकता अभियान को सराहा

अंकलेश्वर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि वृक्षों को नहीं काटना, संयम रखना, अहिंसा रखना, इस रूप में अहिंसा-संयम का विकास होता रहे तो पर्यावरण को भी नुकसान न हो। इसके प्रति जागरुकता अच्छी बात है। अणुव्रत आचार संहिता में भी पर्यावरण संरक्षण की बात कही गयी है।

आचार्यश्री अंकलेश्वर स्थित ई. एन. हाई स्कूल के सभागार में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत पर्यावरण जागरुकता सर्वेक्षण के लिए गूगल फॉर्म के बैनर के अनावरण अवसर पर उद्‌गार व्यक्त कर रहे थे।

आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी जो अणुव्रत आंदोलन की मुख्य संस्था है और पर्यावरण जागरुकता अभियान सम्बन्धी उसका यह अच्छा कार्य है। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने बताया कि गूगल फॉर्म की प्रश्नोत्तरी को भरकर इस सर्वेक्षण अभियान में भागीदारी निभायी जा सकती है।

अणुव्रत आचार संहिता का 11वाँ बिंदु

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

अणुविभा की बालोदय प्रवृत्तियां बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण

अणुविभा के स्थापना दिवस समारोह में बोले कलेक्टर

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी का 43 वां स्थापना दिवस 30 दिसम्बर को संस्था मुख्यालय 'चिल्ड्रन्स पीस पैलेस' में समारोहपूर्वक मनाया गया। मुनिश्री प्रकाशकुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत एक मानवतावादी कार्यक्रम है जो अहिंसा, प्रामाणिकता, सद्भाव, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण जैसे मूल्यों को व्यक्ति व समाज में प्रतिष्ठापित करता है। उन्होंने अणुविभा के सृजन एवं विकास के लिए संस्थापक मोहनभाई की निःस्वार्थ सेवाओं को याद किया।

जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा ने यहाँ संचालित बालोदय प्रवृत्तियों को बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने कहा कि यहाँ की बालोदय दीर्घाओं में बाल पीढ़ी के सर्वांगीण विकास हेतु प्रेरक तत्त्व मौजूद हैं। अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर व निवर्तमान महामंत्री भीखम सुराणा ने नव अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ व नव महामंत्री मनोज सिंघवी को दायित्व हस्तांतरण करते हुए

संस्था के महत्वपूर्ण दस्तावेजों की फाइल सौंपी। इस अवसर पर बालोदय कार्यक्रम पर डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गयी। समारोह में अनेक स्कूलों के प्रिंसिपल व अध्यापक उपस्थित थे जिन्हें जिला कलेक्टर के हाथों से बालोदय कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता हेतु सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष एवं 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं के सम्पादक संचय जैन ने किया। उन्होंने इस संस्था के साथ अपने 35 वर्षों के सुदीर्घ व सक्रिय जुड़ाव को याद करते हुए आचार्य श्री तुलसी का स्मरण किया, जिनके आशीर्वाद परिणामस्वरूप यह संस्था एक विराट स्वरूप में उभर पायी।

मुनिश्री धैर्यकुमार, अणुव्रत गौरव डॉ. बसन्तीलाल बाबेल, अणुविभा महामंत्री मनोज सिंघवी, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, अणुव्रत समिति राजसमंद के अध्यक्ष अचल धर्मावत ने भी विचार व्यक्त किये।

साहित्यकार अफजल खां अफजल व नरेन्द्र शर्मा निर्मल, पत्रकार दिनेश श्रीमाली, शिक्षाविद् डॉ.राकेश तैलंग ने अणुविभा के संस्थापक मोहनभाई के व्यक्तित्व को याद करते हुए इस संस्था के निर्माण व इसकी विश्वव्यापी पहचान को राजसमंद क्षेत्र के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण बताया। अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

डॉ. सीमा कावड़िया ने 'बालोदय शिविर', अभिषेक कोठारी ने 'बालोदय एज्यूटूर', डॉ. राकेश तैलंग ने 'स्कूल विद ए डिफ्रेंस' व प्रकाश तातेड़ ने 'बच्चों का देश' आदि अणुविभा की बाल केन्द्रित प्रवृतियों की जानकारी दी।

इस अवसर पर अणुव्रत गौरव डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अणुविभा के पंचमंडल सदस्य गणेश कच्छारा, सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया, हर्षलाल नवलखा, अध्यक्ष भिक्षु बोधि स्थल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शिविर के दौरान बच्चों का कायाकल्प देख प्रधानाचार्य अचंभित

अमृत भारती आसींद के बच्चे बने अणुव्रत बालोदय शिविर में सहभागी

राजसमन्द। 'आम तौर पर जो बच्चे स्कूल में बोलने व सवाल पूछने में पीछे रहते हैं, उन्हें शिविर के दौरान प्रभावी अभिव्यक्ति देते हुए देखना किसी आश्चर्य से कम नहीं रहा। यह बाल समागम बच्चों में असीम उत्साह के संचार और उनकी भावुक अभिव्यक्ति के लिए याद रहेगा।' अमृत भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय आसींद (भीलवाड़ा) के प्रधानाचार्य ओमप्रकाश जोशी ने अणुविभा मुख्यालय में आयोजित तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर के समापन अवसर पर ये विचार व्यक्त किये।

29 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक आयोजित तीन दिवसीय शिविर में अमृत भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय, आसीन्द (भीलवाड़ा) की कक्षा पाँच से आठ तक के 49 बच्चों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अपने अंदर छिपी प्रतिभाओं, कलाओं और स्वस्फूर्त प्रेरणाओं को बाहर प्रकट करने के अवसर प्राप्त हुए।

'बच्चों का देश' पत्रिका के सम्पादक संचय जैन की 'आओ, खुद से बात करें' विषयक कार्यशाला में बच्चों ने अपने जीवन के उद्देश्य और उनकी प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों को सूचीबद्ध करते हुए उनके समाधान भी ढूँढ़े और अच्छा इंसान बनने की दिशा में सदैव जागरूक रहने का संकल्प व्यक्त किया।

'स्कूल विद ए डिफरेन्स' प्रकल्प के संयोजक पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तैलंग ने अणुव्रत गीत के माध्यम से बच्चों को अणुव्रत दर्शन से परिचित कराया। शिविर की संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने जीवन विज्ञान और योग का अभ्यास कराया।

डिजिटल गैजेट्स का कम उपयोग करने का लिया संकल्प

फरीदकोट। कोटकपूरा अणुव्रत समिति द्वारा बाबा बंदा बहादुर कॉलेज ऑफ एजुकेशन में नशामुक्ति, डिजिटल डिटॉक्स एवं पर्यावरण जागरुकता सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कॉलेज के चेयरमैन पुनित बावा, प्रिंसिपल समीर शर्मा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजन जैन और मंत्री उदय रणदेव के साथ ही अन्य वक्ताओं ने ड्रग और डिजिटल एडिक्शन की समस्या के समाधान के उपाय बताये। साथ ही इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के जरिये होने वाली धोखाधड़ी से बचने के लिए जागरूक रहने तथा समाज में रचनात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

फरीदकोट की एसएसपी डॉ. प्रज्ञा जैन के नेतृत्व में पंजाब पुलिस, सांझ सोसायटी और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के संयुक्त प्रयास के तहत 'मिशन निश्चय - ए ड्राइव अगेंस्ट ड्रग एंड डिजिटल एडिक्शन' प्रोग्राम के तहत आमजन को डिजिटल उपकरणों के दुरुपयोग तथा ड्रग व नशे आदि से दूर रहने और एक-दूसरे के साथ संवाद करने हेतु चलाये गये अभियान की जानकारी प्रदान की गयी। सेमिनार में कॉलेज के प्रोफेसरों, सामाजिक सेवा संगठन के प्रतिनिधियों व छात्रों ने डिजिटल गैजेट्स का उपयोग कम करने का संकल्प भी लिया।

फारबिसगंज के स्कूल में डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम आयोजित

फारबिसगंज। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में संचालित 'अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स' कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत समिति फारबिसगंज द्वारा शाइनिंग स्टार स्कूल में किया गया। समिति अध्यक्ष नीलम बोथरा ने दादी-नानी द्वारा सुनायी जाने वाली कहानियों की रोचकता, मिठास और वात्सल्य का जिक्र करते हुए कहा कि अगर बच्चा स्वयं में सुपर पावर लाना चाहता है तो उसे मोबाइल का दुरुपयोग बंद करना होगा।

कार्यक्रम की संयोजिका निशा राखेचा ने कहानी के माध्यम से बच्चों को जहाँ मोबाइल के दुरुपयोग के बारे में बताया, वहीं उन्हें परिवार के लोगों के साथ मिल-जुल कर बैठने, खेलकूद में शामिल होने और ज्ञानवर्धक चीजों को सीखने की भी प्रेरणा दी। पर्यावरण अभियान की नेपाल-बिहार-बंगाल की सहसंयोजिका प्रभा सेठिया ने कहा कि मोबाइल के बजाय बच्चे यदि खेल, व्यायाम आदि में समय लगाएं तो उनका शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास हो सकेगा। कार्यक्रम की सहसंयोजिका सोनू पटावरी ने बच्चों को मोबाइल से संबंधित छोटी-छोटी सावधानियां बतायीं। शाइनिंग स्टार स्कूल की प्रिंसिपल डी. बसंती ने अणुव्रत समिति के इस कार्यक्रम की सराहना की। स्कूल के डायरेक्टर आनंद अग्रवाल, हरीश अग्रवाल और संजय अग्रवाल ने समिति प्रतिनिधियों को भविष्य में भी स्कूल में ऐसे कार्यक्रम करने के लिए आमंत्रण दिया।

स्कूलों में अणुव्रत-जीवन विज्ञान कार्यक्रम

जयपुर। अणुव्रत समिति के बैनर तले 'विद्यार्थी चरित्र निर्माण' अभियान के तहत 11 दिसंबर को ओमेन सीनियर सेकण्डरी स्कूल में अणुव्रत-जीवन विज्ञान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री तत्त्वरुचि 'तरुण' ने बताया कि अणुव्रत के द्वारा किस तरह छात्रों का चरित्र निर्माण किया जा सकता है। इस अवसर पर सभी छात्रों ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किये। कार्यक्रम में 225 विद्यार्थी तथा 16 शिक्षक उपस्थित थे।

इससे पहले विद्यालय डायरेक्टर भंवर सिंह नाथावत तथा विद्यालय शिक्षा समिति के सचिव नाथू सिंह नाथावत ने मुनिश्री का स्वागत किया। अणुव्रत समिति के सदस्य प्रदीप कुमार तथा महेंद्र कुमार दुधोडिया ने स्कूल डायरेक्टर भंवर सिंह नाथावत को अणुव्रत दुपट्टा पहनाया तथा अणुव्रत पट्ट व साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

अणुव्रत समिति के बैनर तले 20 दिसम्बर को ट्विंकल किड्स स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री तत्त्वरुचि 'तरुण' ने छात्रों को अणुव्रत आचार संहिता के नियमों का संकल्प दिलवाया। कार्यक्रम में विद्यालय के 329 छात्र-छात्राओं सहित 18 शिक्षकों-शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

विद्यालय प्रधानाध्यापक भागवत साहनी ने मुनिश्री का स्वागत एवं आभार ज्ञापित किया। अणुव्रत समिति के सहमंत्री द्वितीय कमलेश बरड़िया, अणुव्रत कार्यकर्ता अनंत हर्ष तातेड़ और नरेंद्र चिंडालिया ने विद्यालय परिवार को अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

शिक्षा जगत में जीवन विज्ञान की जरूरत

इचलकरंजी। अणुव्रत समिति की ओर से विवेकानंद गर्ल्स हाई स्कूल में 'शिक्षा जगत में जीवन विज्ञान की आवश्यकता' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। इसमें मुख्य प्रशिक्षक विकास सुराणा ने जीवन विज्ञान के बारे में विस्तृत जानकारी देने के साथ ही छात्राओं को श्वास, महाप्राण ध्वनि, ज्ञानकेंद्र और प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन से छात्राओं के लिए जीवन विज्ञान का नित्य प्रशिक्षण व प्रयोग करवाने का आह्वान किया।

राष्ट्रपति भवन के पुस्तकालय में भी अब पहुँचेगी अणुव्रत पत्रिका

नयी दिल्ली। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी का गौरवशाली प्रकाशन 'अणुव्रत' पत्रिका नये कलेवर में उच्च स्तरीय सामग्री रोचकता से पाठकों तक पहुँचा रही है। राष्ट्रपति सचिवालय में मैसेज सेक्शन ऑफिसर नीता थडानी की पहल पर नववर्ष 2025 से राष्ट्रपति भवन के पुस्तकालय में 'अणुव्रत' पत्रिका भी पहुँचेगी। इससे पुस्तकालय में आने वाले पाठक अणुव्रत पत्रिका के माध्यम से अणुव्रत आन्दोलन से परिचित हो पाएंगे। अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने विभाग के ऑफिसर सर्वेश जी को अणुव्रत पत्रिका भेंट की।

अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र में कार्यशाला

चूरू। अणुव्रत समिति द्वारा चलाये जा रहे अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र में 21 दिसंबर को कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न धर्म-संप्रदाय की करीब 35 महिलाओं ने भाग लिया। समिति अध्यक्ष रचना कोठारी ने बताया कि केंद्र में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक प्रकार के प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

'अणुव्रत'
पत्रिका

प्रकाशन के **70** वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश'
पत्रिका

प्रकाशन के **25** वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िये

अवधि	'अणुव्रत'
1 वर्ष	₹ 800
3 वर्ष	₹ 2200
5 वर्ष	₹ 3500
योगक्षेमी (15 वर्ष)	₹ 21000

'अणुव्रत' पत्रिका हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA
BHARATI SOCIETY
CANARA BANK
DDU MARG, NEW DELHI
A/c No. : 0158101120312
IFSC Code : CNRB0000158

अवधि	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 500
3 वर्ष	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 2100
योगक्षेमी (15 वर्ष)	₹ 15000

'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA
BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100